विचार बिन्दु

बुद्धि से विचार कर किए गए कर्म ही सफल होते हैं। –महाभारत

डिजिटल मुद्रा की तरफ फूंक-फूंक कर कदम रखने की जरूरत

नोटबंदी से क्या हासिल हुआ यह सवाल अब भी अनुत्तरित है। आम तौर पर नोटबंदी जैसे कदम अर्थव्यवस्था से काले धन को बाहर करने के लिए होती है। किन्तु वित्त विश्लेषकों को नहीं लगता कि नोटबंदी का कदम, जिसके लिए केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार को अब तक उलाहनें झेलने पड रहे हैं, बहुत सफल रहा। लेकिन उसका एक असर लोगों का डिजिटल लेनदेन की तरफ प्रवत्त होना भी रहा जो सभी के लिए इतना सुविधा जनक रहा है कि आरबीआई अब डिजिटल मुद्रा जारी करने के लिए तत्पर हुआ है और देश का पहला डिजिटल रुपया पायलट प्रोजेक्ट एसबीआई, एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक सहित नौ बैंकों के साथ शुरू हो गया है। ये बैंक सरकारी प्रतिभूतियों में लेनदेन के लिए आभासी मुद्रा जारी करेंगे। यह एक लंबी राह की छोटी शुरुआत है जिसके अनुभवों के आधार पर भविष्य का ढांचा बनेगा। आरबीआई ने एक महीने के भीतर सीमित उपयोगकर्ता समूहों में चुनिंदा स्थानों पर खुदरा खंडके डिजिटल रुपये में भी पहला पायलट लॉन्च करने की योजना है बनाई है। इसमें ग्राहक और व्यापारी शामिल होंगे। नई व्यवस्था के लिए संसद से इजाजत लेकर जरूरी वैधानिक प्रक्रियाएं पूरी की जा चुकी है और आशा की जाती है कि इस परियोजना में अगले वर्ष में भारत के लोग अपने बटुओं में नकदी की बजाय अपने मोबाइल फोन में डिजिटल मुद्रा रखने लगेंगे। आरबीआई डिजिटल मुद्रा जारी करने के लिए चरणबद्ध तरीके से चलने का संकेत दिया है।

हम पाते हैं कि तेजी से कैशलेस व्यवस्था की तरफ बढ़ते हुए देश के करोडों युवा पुराने तरीकों को छोडते जा रहे हैं। यह वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया के सबसे बडे मोबाइल भुगतान सेवा प्रदाताओं में से एक, पेटीएम के उपयोगकर्ताओं की रैंक को बढा कर 400 मिलियन से अधिक हो जाने में मदद की है। अब कोई उद्यमी बिक्री के लिए पेटीएम और ऑनलाइन ट्रांसफर के लिए रेजरपे के प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है तो व्यक्तिगत उपयोग के लिए अन्य प्लेटफार्मों में से किसी एक को प्राथमिकता देता है। उसे मालूम है कि इस तरह मौद्रिक लेनदेन जल्दी और आसानी से किया जा सकता है। युवा पीढी अधिक से अधिक यूपीआई और वॉलेट जैसे कैशलेस तरीकों का भी उपयोग कर रही है, और नई प्रोद्योगिकी उनके लिए लेनदेन को आसान बना रही है। कुछ उत्पादों के लिए छोटे मूल्य के लेनदेन भी हो रहे हैं। इससे नकदी को संभालने की परेशानी भी काम होती है। वैसे भी पिछले पांच वर्षों में भारत में डिजिटल भुगतान या लेनदेन लगभग 50 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से बढा है। यह अपने आप में दुनिया की सबसे तेज विकास दर है। इसे दुनिया भर के विश्लेषक अद्वितीय बताया रहे हैं। रीयल-टाइम, मोबाइल-सक्षम सिस्टम, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) में इसका विस्तार और भी तेजी से हुआ है। यह लगभग 160 प्रतिशत सालानादर से बढा है। एक साल पहले जून में डिजिटल लेन-देन दोगुने से अधिक बढकर 5.86 बिलियन रुपयों का हो गया। इस लेनदेन में बैंकों की भागीदारी 44 प्रतिशत बढ गई। इसमें आरबीआई की भूमिका उत्प्रेरक की रही जिसने फीचर फोन (टचस्क्रीन के बजाय बटन वाले पुराने डिवाइस) के लिए भी एक यूपीआई पेश की जो दूर-दराज के ठामीण क्षेत्रों में 400 मिलियन उपयोगकर्ताओं को जोड सकता है। यूपीआई प्रणाली 2016 में अपनाई गई थी। विमुद्रीकरण की पहल का झटका उसी वर्ष के अंत में आया था, जब उच्च मूल्य वाले बैंकनोट प्रचलन से वापस ले लिए गए थे और जिसकी गूंज अब तक बनी हुई है।

जिस प्रकार कोई पॉकेटमार जेब से रुपया चुरा लेता है वैसे ही डिजिटल रुपया चोरी न हो जाय इसके लिये निजी डाटा की सुरक्षा की व्यवस्था करनी होगी। इन सरोकारों को ध्यान में रखते हुए सरकार डिजिटल अर्थव्यवस्था के वास्ते व्यापक कानूनी ढांचा बनाने में लगी हुई है। भारत में अभी डाटा सुरक्षा का कोई स्पष्ट कानून नहीं है।

यूपीआई वास्तव में भुगतान के लिए देश में प्रचलित नियमों और कागजी कार्रवाई के पैचवर्क के जवाब के रूप में देखा गया। इसका लक्ष्य व्यक्तिगत और व्यावसायिक उपयोग के लिए एक ही मोबाइल प्लेटफॉर्म पर कई बैंक खातों की अनुमति देकर रुपये-पैसों के हस्तांतरण को आसान और सुरक्षित बनाना था। यह प्रवधिकी तेजी से लोगों को भा गयी। वैसे तो यूपीआई नेटवर्क की उत्पत्ति बहुत पहले 2006 की है, जब आरबीआई और भारतीय बैंक संघ ने संयुक्त रूप से नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) का गठन किया था। इसका लक्ष्य खुदरा भुगतान के डिजिटलीकरण के लिए एक संस्थान बनाना था जिसकी छत के नीचे सब काम हो। यह संस्थान एक गैर-लाभकारी कंपनी के रूप में बनाया गया था जिसका उद्देश्य भारत के लोगों को एक सार्वजनिक व्यवस्था प्रदान करना था। इसके महत्व को विशेषज्ञों ने भी स्वीकार किया। बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स के शोधकर्ताओं ने 2019 के एक पेपर में लिखा था कि डिजिटल वित्तीय आधारभूत संरचना प्रदान करने की यह व्यवस्था सार्वजनिक रूप से लाभदायी है तथा सभी अर्थव्यवस्थाओं के लिए, चाहे वे विकास किसी भी चरण में हों, प्रासंगिक है। एनपीसीआई के अधिकारियों के अनुसार, भारत में व्यक्तिगत डिजिटल भुगतान के उपयोगकर्ताओं की वृद्धि पांच वर्षों में तिगुनी होकर 750 मिलियन हो जाएगी; व्यापारी उपयोगकर्ता 100 मिलियन तक दोगुने हो सकते हैं। वे बताते हैं कि भुगतान प्रणालियों के विविध पारिस्थितिकी तंत्र को केंद्रीय बैंक बढावा देता है, जिसमें रुपे, एक बडे बाजार हिस्सेदारी के साथ एक डेबिट और क्रेडिट कार्ड जारीकर्ता, राष्ट्रीय वित्तीय स्विच कैश मशीन नेटवर्क, और राष्ट्रीय पहचान कार्यक्रम का उपयोग करने वाली भुगतान प्रणाली शामिल है। इससे उन इलाकों को लाभ पहुंचाना है जहां बैंकिंग सेवाओं की कमी है। इसीलिए आरबीआई ने निर्धारित किया था कि भारत जैसे बडे देश को कई भुगतान प्रणालियों की आवश्यकता है ताकि नागरिक अनेक भुगतान विकल्पों में से किसी एक का अपने लिए चुनाव कर सकें। यूपीआईजैसी प्रणाली किसी भी देश में तब तक नहीं आ सकती जब तक कि वहां की केंद्रीय बैंक और उस देश की सरकार ऐसा नवाचार लाने की इच्छुक न हो, जो भुगतान प्रणाली को सबसे छोटे मूल्य और सबसे उचित लागत पर लोकतांत्रिक बना दे। भारत में उपभोक्ताओं के लिए यूपीआई आज लगभग मुफ्त है, और सरकार यूपीआई मर्चेंट भुगतान को बढावा देने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

स्मार्टफोन युग की शुरुआत के बाद से नकदी पर निर्भरता पहले ही तेजी से कम होती जा रही थी, मगर कोरोना महामारी से बचने के उपायों ने संपर्क रहित डिजिटल लेनदेन को और बढावा देने में मदद की, विशेष रूप से छोटी मात्रा के लिए, क्योंकि उस काल में लोग आपसी संपर्क कम करके खुद को वायरस से बचाने की कोशिश कर रहे थे। यह परिवर्तन एक अद्वितीय घरेलू नवाचार भी था जो इंडिया स्टैक, एक डिजिटल पहचान और भुगतान प्रणाली पर आधारित है, जो एक खुले एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस या एपीआई पर बनाया गया है। राष्ट्रीय पहचान कार्यक्रम, आधार को शामिल करके यह 1.3 बिलियन उपयोगकर्ताओं के साथ उपभोक्ताओं की सेवाओं तक पहुंच को आसान बनाकर अधिक वित्तीय समावेशन की एक ताकत साबित हुआ है। देखा जाय तो ओपन-स्टैक तकनीक यूपीआई की नींव है, जिसने भारत के डिजिटल भुगतान के परिदृश्य को बदल दिया है। सरकार ने ओपन-स्टैक तकनीक को बढावा दिया ताकि लोग बहुत तेज़ी से इस समूह में जुड सकें। इसके लिए पारंपरिक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के अलावा निजी फिनटेक कंपनियों को भी बढावा दिया गया जिससे इन तकनीकों का तेजी से अपनाया जाना संभव हो सका। सबसे बडी बात यह है कि ये सेवाएं नागरिकों को नि:शुल्क उपलब्ध हैं, और यही भारत के डिजिटल में परिवर्तन की विशिष्टता भी है। अब इनसे आगे बढ कर डिजिटल मुद्रा के युग में प्रवेश किया जा रहा है।

डिजिटल मुद्रा जिसे सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) कहा जाता है अभी दुनिया भर में वैचारिक, विकास और प्रायोगिक चरणों में है।इसके लिए आरबीआई को अपने यहां यह प्रौद्योगिकी किस प्रकार पनपती है उस पर ध्यान देने के साथ ही दुनिया भर में हो रहे उसके प्रयोगों पर भी निगाह रखने की जरूरत है। क्योंकि हमारे पास इसके बारे में कोई पूर्व का ज्ञान नहीं है इसलिए हमें हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श करके ऐसी यंत्र-तकनीक विकसित करनी होगी जो हमारी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो। आरबीआई ने भी माना है कि इसके लिए विस्तृत तैयारी की जरूरत है। हम आशा कर सकते हैं कि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए हम सतर्कता के साथ समयबद्ध तरीके से डिजिटल मुद्रा की ओर अग्रसर होंगे। उसे ऐसे नवोन्मेषी तरीके खोजने होंगे जो डिजिटल मुद्रा को नकद जितना ही लोकप्रिय बना सके। मगर सरकार को आम जन की गोपनीयता की चिंता का भी ध्यान रखना है। जिस प्रकार कोई पॉकेटमार जेब से रुपया चुरा लेता है वैसे ही डिजिटल रुपया चोरी न हो जाय इसके लिये निजी डाटा की सुरक्षा की व्यवस्था करनी होगी। इन सरोकारों को ध्यान में रखते हुए सरकार डिजिटल अर्थव्यवस्था के वास्ते व्यापक कानूनी ढांचा बनाने में लगी हुई है। भारत में अभी डाटा सुरक्षा का कोई स्पष्ट कानून नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने डाटा सुरक्षा को संविधान की धारा 21 के तहत मूलभूत अधिकार माना है। नई व्यवस्था में किस हद तक किसी को गुमनाम रहने का अधिकार होगा यह एक राजनीतिक और सामाजिक प्रश्न है, जिस पर भी संभल कर निर्णय लेना होगा। इसमें केवल संकीर्ण तकनीकी प्रश्न के बजाय वित्तीय स्थायित्व के जोखिम को भी ध्यान में रखना होगा। प्रस्तावित डिजिटल मुद्रा केंद्र सरकार और आरबीआई की महत्वाकांक्षी योजना है जिसके लिए पारदर्शिता सुनिश्चित करने का वादा किया गया है। मगर ऐसे कदम फूंक-फूंक कर रखे जाने की जरूरत है। आरबीआई ने इस बारे में एक कन्सेप्ट नोट जारी कर आश्वस्त किया है कि वह सभी सरोकारों को ध्यान में रखे हुए हैं।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

आजादी के गुमनाम-मानगढ़ी के आदिवासी नायक-हाशिए पर

यादरामसिंह यादव

भारत में प्रारम्भ से ही आदिवासियों (मूलनिवासियों) में प्रकृति की सम्पदा– जल, जंगल और जमीन को बचाने एवं सुरक्षित रखने की वैज्ञानिक व धार्मिक सोच विद्यमान थी। आदिवासियों के प्राकृतिक अधिकारों के समर्थक राजा महाराजाओं तथा संतों-महापुरूषों के साथ मिलकर विदेशी आक्रान्ताओं -मुसलमानों तथा अंग्रेजों के विरूद्ध अपनी स्वायत्तता को बचाने के लिए अनेक विद्रोह एवं आन्दोलन किए। जिसमें उन मूलनिवासियों ने हजारों-लाखों की संख्या में अपने क्षेत्रों की प्राकृतिक संपदाओ व वन्य जीवों को बचाने में अपनी कुर्बानियां दी है।` अंग्रेजों के विरूद्ध, उनके थोपे गए शोषणकारी कानूनों एवं भारतीयों की स्वायत्तता पर किये गए कानूनी हमलों/आक्रमणों के खिलाफ अपने प्राणों की आहुति देकर भारत की अक्षुणता को कायम रखा है। आदिवासी वनों, पहाड़ों, नदी-नाडियों, वीहड़ों एवं वन्य जीवो की प्राकृतिक सम्पदा को सुरक्षित व संरक्षित रखने में अमूल्य योगदान देते आ रहे है। वे जंगलों व पर्वतीय क्षेत्रों में रहकर वहाँ अपनी बोली-भाषा, पहनावा, कला एवं संस्कृति को बचाये रखकर निरन्तर पीढ़ी-दर पीढ़ी अपने उत्तराधिकारियों को सोंपकर जीवित बनाये हुए हैं। ताजा आँकड़ो के अनुसार वर्तमान में देश में आदिवासियों की जनसंख्या 8.6 प्रतिशत यानि बारह करोड है।

भारत देश में अनेकों सदियों से अपनी स्वायत्तता, प्राकृतिक सम्पदा व धरोहरों एवं वन्य जीवों को बचाने में आदिवासियों ने अनेक विद्रोह व आन्दोलन किए है। जिनको इतिहास में कोई उचित स्थान नहीं दिया गया है। ऐसे कुछ प्रमुख विद्रोह व आन्दोलनों में:- अकबर एवं राणा प्रताप के बीच हुआ 18 जून 1576 का हल्दीघाटी का युद्ध, उडीसा का कान्डा विद्रोह या तिलका मांझी आन्दोलन 1772-1866, कोल विद्रोह 1821-36 उडीसा का हजारीबाग रांची विद्रोह, संथाल विद्रोह मुर्मू भाईयों का आन्दोलन 1855-56 संथालहुल झारखंड, मुण्डा विद्रोह (उलगुलान) 1897-1900 छोटा नागपुर, ताना भगत आन्दोलन 1914-1919 उरांव आदिवासियों का रांची से शुरू, रामपा विद्रोह 1879-1922 मद्रास प्रसीडेन्सी के विजयापरम पर्वतीय क्षेत्र से शुरू, राजस्थान का भील विद्रोह 1880-1913 मानगढ पहाड़ी नरसंहार, रानी गैडिनलियु-हेराका आन्दोलन 1915 नागाराज्य स्थापना आन्दोलन, गुजरात का विजयनगर आदिवासी विद्रोह 1922. उपरोक्त के अलावा भी दलित आदिवासियों के

बंजारा समुदाय के महान धार्मिक सन्त गोविन्द गुरू के नेतृत्व में भील आदिवासियों में मांसाहार छोडकर शाकाहार अपनाने व शराब त्यागने सम्बंधी सामाजिक सुधार आन्दोलन सन् 1890 में शुरू हुआ था। इसी समय गुजरात में उन्होंने भगत आन्दोलन को मजबूती देने के लिए सम्प सभा की स्थापना की। उन्होंने अपना भगत आन्दोलन लम्बे समय तक चलाया। यह आन्दोलन अंग्रेजों एवं स्थानीय जमीदारों, साहूकारों द्वारा भील आदिवासियों से मुफ्त में करायी जा रही बेगार प्रथा, वेट प्रथा तथा अन्य उत्पीड़नों के विरूद्ध था। सम्प सभा और गोविन्द गुरू के नेतृत्व में भीलों ने अंग्रेजों के सामने 33 मांगे रखी। जिनमें मुख्य रूप से बंधुआ मजदूरी, बेगार प्रथा व भारी लगान से संबंधित थी। इन मांगो से जमीदारों व रजवाड़ां को लगा कि, भील आदिवासी अनको चुनौती दे रहे है। उन्होंने गोविन्द गुरू के विरूद्ध षड़यन्त्र रचने की सूचना अंग्रेजों को दी। जिस पर अंग्रेजों द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। किन्तु आदिवासियों के तीव्र विरोध करने पर गोविन्द गुरू को छोड़ दिया गया। इसके बाद जमीदारों तथा स्थानीय राजाओं का भीलों पर अत्याचार बढ़ता गया। अंग्रेजी हुकूमत ने आदिवासियों के बढ़ते आक्रोश को देखते हुए जुताई (बेगार) के बदले साल के 'सवा रूपया' देने का वादा कर आदिवासियों को 15 नवम्बर 1913 तक मानगढ़ की सभा को खत्म कर पहाड़ी खाली करने का समय दिया। जो भीलों को बिलकुल मंजूर नहीं था। आदिवासियों ने कहा कि 'ओ अंग्रेजों' तुम्हारे सामने, हम नही झुकेंगे, नहीं मानेंगे।

अपनी मांगो पर कोई कार्यवाही नहीं होने पर तथा जमीदारों के बढ़ते अत्याचारों पर विचार विमर्श करने हेतु क्षेत्र के समस्त भील मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्रित हुए। स्थानीय जमीदारों व राजाओं ने अंग्रेजों को भीलों के संगठित होकर इकत्रित होने को अंग्रेजों के विरूद्ध षडयंत्र बताया और कठोर कार्यवाही के लिए प्रोत्साहित किया। 17 नवम्बर 1913 को मेजर हैमिल्टन ने, अपने तीन अधिकारियों रजवाड़ों व जमीदारों की सेनाओं के साथ मानगढ़ पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने खच्चरों पर लादकर बन्दूको, स्टेनगनों व तोपों को मानगढ़ के चारों ओर पहाड़ी पर तैनात किया गया। अंग्रेजी सैनिकों द्वारा सुबह 8 बजे ही निर्दोष, निहत्थे सभा कर रहे लोगों पर बर्बरतापूर्वक स्टेनगन मशीनों तथा तोपों से अन्धाधुंध फायरिंग करवायी। जो दोपहर तक निरन्तर जारी रही। बन्दूकें, स्टेनगन व तोपें पहाड़ी के चारों ओर गोला बनाकर तैनात कर चलायी गयी। जिससे चारो ओर भागते हुए ज्यादा से ज्यादा लोग मारे जावें।

अंग्रेजी सेना ने नौ सौ लोगो को जिंदा पकड़ लिया एवं उनको अपनी मांगे छोड़ने को मजबूर किया, किन्तु गोविन्द गुरू के शिष्यों ने अपनी मांगो पर एवं स्वाधीनता देने पर अडे रहे। तब उन समस्त पकड़े गए नौ सौ निहत्थे, भील आदिवासियों को गोली से भून दिया गया। यह नरसंहार इतना भीभत्स था कि जिसका भय आजादी के कई दशक बाद तक भीलों में देखा गया। जो मानगढ़ पहाड़ी पर जाने में कतराते हैं। बहादुर

भील आदिवासी जो राणा प्रताप की सेना प्रमुखों के वंशज थे, उनके तलवार व तमन्चो स्टेनगनों के सामने असफल रहे ।मानगढ़ पहाड़ी के इस भयंकर नरसंहार में 1500 आदिवासियों ने अपने अधिकारों व देश की स्वायित्तता के लिए बलिदान दिया और हजारों की संख्या में घायल हुए थे।

गोविन्द गुरू के सहयोगी दादा तीहा के वंशज लालशंकर पारघी ने हत्याकाण्ड से संबंधित सभी भीलों के गाँव-गाँव घर-घर जाकर सर्वे करके 250 परिवारों की प्रमाणिक जानकारी संग्रहित की है। अपने दादा का स्मारक 'जगमन्दिर खत का चौपड़ा' के नाम से बनाया है। राजस्थान व गुजरात की सीमा पर बसे बांसवाड़ा-पंचमहाल के सुदुर अंचल में दफन यह ऐतिहासिक दुखान्तिका भारत की आजादी की लडाई को 'प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम' माना जाना चाहिए।

गुजरात व राजस्थान सरकार ने मिलकर मानगढ़ हत्याकाण्ड के 2013 में सौ वर्ष पूरे होने पर आदिवासियों की सहादत की सौवीं सालग्रह मनायी थी। जिसमें मानगढ़ पहाड़ी पर गोविन्द गुरू के नाम पर एक बाटॅनीकल गार्डन का उद्घाटन गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गोविन्द गुरू के प्रपौत्र मानसिंह को सम्मानित कर किया था । उद्घाटन समारोह में अस्सी हजार भील आदिवासी शामिल हुए थे। यहां वर्तमान में एक बडा स्मृति स्तम्भ तथा पैनोरामा बनाये गए है। जो दर्शनीय हैं। ''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा''।

यादरामसिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं साहित्यकार

हथाई के जर्जर आंगनबाड़ी केंद्र की पट्टी गिरी

डूंगरपुर, (निसं)। दोवडा ब्लॉक के हथाई गांव में जर्जर हो चुके आंगनबाडी केंद्र की छत की पट्टी अचानक गिर गई। हादसे के समय केंद्र में 10 बच्चे और आंगनबाडी कार्यकर्ता, आशा सहयोगिनी और सहायिका मौजूद थीं। सूचना पर सरपंच और पीईओ ने आंगनबाडी केंद्र का निरीक्षण किया।

हथाई पंचायत के सरपंच विजयपाल ने बताया कि मंगलवार को गांव के आंगनबाडी केंद्र में सुबह 11 बजे के करीब 10० बच्चे और आंगनबाडी कार्यकर्ता पुष्पा पाटीदार, आशा सहयोगिनी भानुमती वैष्णव और सहायिका तारा देवी मौजूद थे। आंगनबाडी कर्मचारी अपने-अपने काम में लगे थे और बच्चे पोषाहार खा रहे थे। इस दौरान कमरे की छत की पट्टी अचानक गिर गई। पट्टी गिरते ही आंगनबाडी केंद्र में मौजूद बच्चे और कर्मचारी घबरा गए। हादसे के बाद आंगनबाड़ी कर्मचारियों ने सरपंच विजयपाल पीइओ पंकज वर्मा को सूचना दी। सूचना पर सरपंच और पीईओ ने आंगनबाडी केंद्र का निरीक्षण किया। इस मौके पर सरपंच विजयपाल ने बताया कि आंगनबाडी पूरी तरह से खंडहर अवस्था में है। केंद्र में 63 बच्चों का नामांकन है।

हथाई गांव में आंगनबाड़ी केंद्र पर छत की पट्टियां गिर गई।

चार साल बाद फिर से आयोजित होगी कार रैली

मंडावा, (निसं)। कस्बे में 4 साल बाद कार रैली का आयोजन होने जा रहा है। जिसमें ऑल इंडिया से प्रतिभागी भाग लेंगे। इस कार रैली प्रतियोगिता आयोजन को लेकर तैयारियों को लेकर आयोजक मंडावा पहुंचे। ऑटोज 365 मोटर्स स्पोर्ट्स की ओर से इस कार रैली प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। ब्लेज डे डेजर्ट टीएसडी कार रैली 16, 17 एवं 18 दिसंबर तक आयोजित की जाएगी। ऑटोज 365 मोटर स्पोर्ट्स जयपुर के रैली ड्राइवर एवं को फाउंडर रिहन भारद्वाज जयपुर ने बताया कि इस कार रैली प्रतियोगिता को देश की कई बड़ी कंपनियां स्पॉन्सर कर रही है तथा इस कार रैली का शुभारंभ 16 दिसंबर 2022 को गुरूग्राम से होगा तथा 17 दिसंबर को कार रैली गुरूग्राम से रवाना होकर शाम तक मंडावा गढ़ परिसर में पहुंचेगी तथा 18 दिसंबर को सुबह मंडावा गढ से रैली शुरू होकर जो विभिन्न रूट से होते हुए कुहाड़ू, कोलाली, पाटोदा,टांई, बिसाऊ, अलसीसर, महनसर, मलसीसर, रामगढ शेखावाटी, तिहावली, खालासी, सदीनसर, डाबडी, दीनवा, चूडी अजीतगढ़ के रेतीले धोरों से होते हुए शाम को मंडावा पहुंचेगी। उक्त कार रैली मंडावा सफारी के संचालक अनिरुद्ध सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित होगी तथा 18 दिसंबर शाम को प्रतिभागियों एवं विजेताओं को पुरस्कार के रूप में ट्रॉफी देकर सम्मानित किया जाएगा।

इंदिरा रसोई में सभापति को परोसी पानी वाली सब्जी व जली रोटी

चूरू, (कासं)। जिला मुख्यालय पर आज इंदिरा रसोई में अव्यवस्थाओं को देखकर सभापति पायल सैनी ने संचालकों को जमकर फटकार लगाई। पायल सैनी ने कहा कि मुख्यमंत्री के सपनों को साकार नहीं करने वालों को बक्शा नहीं जायेगा। उल्लेखनीय है कि सभापति पायल सैनी ने मंगलवार को नया बस स्टैण्ड व पंखा रोड़ स्थित इंदिरा रसोई का औचक निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया जहां उन्हें पानी वाली सब्जी व जली रोटी संचालकों ने खाने में परोसी ।

नया बस स्टेण्ड के पास इंदिरा रसोई में वहां रसोई चालू नहीं मिलने पर सभापति ने रसोई संचालक पर जुर्माना लगाने व आगे से रसाई को सुचारू रूप से चलाने के निर्देश दिये, मजे की बात तो यह थी कि जब सभापति पार्षदों के साथ खाना खाने बैठी, तो वहां सब्जी व कढ़ी नहीं मिली। पूछने पर पता चला की रसोई का पूरा खाना दूसरी इन्दिरा रसोई से आता है। इस रसोई में खाना बनता ही नहीं। काफ़ी देर इंतज़ार करने के बाद सभापति नाराज होकर बिना खाना खाए ही वापस लौटी। सभापति पायल सैनी ने रसोई संचालकों से कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के ड्रीम प्रोजेक्ट को इस तरह धूमिल करने वाले को बक्शा नहीं जाएगा।

उन्होंने कहा कि वे सीएम के माह में एक बार इंदिरा रसोई के भोजन को चखने के निर्देश की पालना करने आई है । सभापति ने पंखा रोड़ पर संचालित इंदिरा रसोई के अवलोकन के दौरान सब्जी पानी की तरह बनी देखकर नाराजगी व्यक्त की और कच्ची व जली हुई रोटी को देखकर कहा कि लोगों के लिए संवेदनशील बनकर खाना परोसें । सभापति ने रसोई घर में खाना खा रहे लोगों से खाने की गुणवत्ता के बारें में जानकारी ली।

बेहतर व्यवस्थाओं के लिए उन्होंने कहा कि पार्षदों की कमेटी बनाकर समय- समय पर इंदिरा रसोईयों का अवलोकन किया जायेगा। इस अवसर पर पार्षद अंजनी शर्मा, अनीश खा, लोकेश सैनी, शाहरुख खान, शाहिद, नगरपरिषद के जिला परियोजना अधिकारी अजय सिंह आदि उपस्थित थे।

सभापति पायल सैनी ने नया बस स्टैण्ड व पंखा रोड़ स्थित इंदिरा रसोई का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

- **इंदिरा रसोई में अव्यवस्थाओं को देखकर सभापति ने लगाई संचालकों को फटकार**
- **लम्बे समय से कर रहे थे गरीबों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 2 नवम्बर, 2022

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 1:43 तक, गंड योग दिन 10:26 तक, बालव करण दिन 10:07 तक, चन्द्रमा दिन 2:16 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज आंवला नवमी, अक्षय कुष्मांड नवमी, श्री हरि जयन्ती, कृत यूगादि है और पंचक दिन 2:16 से आरम्भ होंगे।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:26 तक, शुभ 10:48 से 12:10 तक, चर 2:55 से 4:17 तक, लाभ 4:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:41, सूर्यास्त 5:40

मेष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में मांगलिक-धार्मिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से भागदौड़ से राहत मिलेगी। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। धन खर्च पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है और परिजनों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।